

पाकस्तान में आज़ादी मार्च

परीलम्स के लिये:

आज़ादी मार्च

मेन्स के लिये:

आज़ादी मार्च का भारत और पाकस्तान पर प्रभाव

चर्चा में क्यों?

वर्तमान में पाकस्तान में मौलाना फज़लुर रहमान के नेतृत्व में 'आज़ादी मार्च' जारी है। इस प्रदर्शन का मुख्य उद्देश्य पाकस्तान में लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई सरकार को गरिना है। प्रदर्शनकारियों का कहना है कि पाकस्तान के प्रधानमंत्री ने असंवैधानिक रूप से चुनावों में जीत हासिल की है, इसलिये वे प्रधानमंत्री इमरान खान के इस्तीफे की मांग कर रहे हैं।

- गौरतलब है कि पाकस्तान की राजनीति में वपिक्षी दलों द्वारा वरिध प्रदर्शनों के माध्यम से लोकतांत्रिक सरकार को गरिने का प्रयास एक आम बात हो गई है और इस प्रकार की लगभग सभी घटनाओं में पाकस्तानी सेना की एक वरिष भूमिका दिखाई देती है।

पाकस्तान का नया संकट- आज़ादी मार्च

- पाकस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान के पद ग्रहण करने के पश्चात् यह पहला मौका है जब उनके सामने कोई बड़ी राजनीतिक चुनौती उत्पन्न हुई है।
- ध्यातव्य है कि वर्ष 2018 में हुए पाकस्तानी चुनाव काफी विवादास्पद थे और यह कहा गया था कि पाकस्तानी सेना ने चुनावों में हेर-फेर कर इमरान खान को जिताने का प्रयास किया है।
- प्रदर्शनकारी इसी वषिय को लेकर अपना वरिध दर्ज करा रहे हैं और उन्हें पाकस्तान के प्रमुख वपिक्षी दलों का समर्थन भी प्राप्त है।
- प्रदर्शन का नेतृत्व कर रहे फज़लुर रहमान का कहना है कि वर्ष 2018 के चुनाव अनुचित थे और इसलिये पाकस्तान के प्रधानमंत्री को अपना पद छोड़ देना चाहिये।
- इसके अलावा फज़लुर रहमान का यह भी मानना है कि इमरान खान कश्मीर के मुद्दे पर कुछ नहीं कर रहे हैं एवं करतारपुर गलियारे की शुरुआत पाकस्तान के हित में नहीं है।
- गौरतलब है कि पाकस्तान की वर्तमान आर्थिक स्थिति भी अत्यंत खराब है, जसि लेकर समय-समय पर प्रधानमंत्री इमरान खान के वरिध आवाज़ उठती रही है। यह कहना गलत नहीं होगा कि पाकस्तान अपने इतिहास में सबसे खराब आर्थिक संकट का सामना कर रहा है।
 - पाकस्तान के वर्तमान हालात भी इस प्रदर्शन के लिये ज़म्मेदार माने जा सकते हैं और इसी कारण लोग प्रदर्शन को अपना समर्थन दे रहे हैं।

आज़ादी मार्च- भारत पर प्रभाव

- वरिषज्जों का मानना है कि पाकस्तान में हो रहे 'आज़ादी मार्च' का भारत पर कुछ खास प्रभाव नहीं पड़ेगा, क्योंकि भारत और पाकस्तान के वर्तमान रश्ते अपने सबसे खराब दौर से गुज़र रहे हैं।
- यदि प्रदर्शन सफल रहता है, हालाँकि इसकी संभावना बहुत कम है, तो पाकस्तान की घरेलू राजनीति में काफी परिवर्तन देखने को मलि सकता है।
- इस प्रदर्शन की सफलता का भारत के लिये एक खतरा यह है कि मौलाना फज़लुर रहमान, जो कि प्रदर्शन का नेतृत्व कर रहा है, की छवि भारत के प्रति बहुत अच्छी नहीं मानी जाती है।
 - मौलाना फज़लुर रहमान के अफगान तालबिन के साथ घनषिठ संबंध बताए जाते हैं। साथ ही उसने वरिध कुछ वर्षों में कई बार अमेरिकी वरिधी

- और तालबिन समर्थति प्रदर्शनों का नेतृत्व भी किया है ।
- वर्ष 2012 में उसने नोबेल वजिता मलाला यूसुफज़ई के वरिध में भी कई बयान दये थे ।

नष्कष

पाकस्तान में वरिध प्रदर्शन के कारण अफरा-तफरी का माहौल है, परंतु फलिहाल इस बात की संभावना नहीं है कविपिकषी दल इमरान खान को सत्ता से हटा पाएंगे । हमेशा की तरह इस बार भी यही प्रतीत हो रहा है कअंतमि नरिणय पाकस्तानी सेना द्वारा ही लिया जाएगा । गौरतलब है कइस प्रकार का पछिला प्रदर्शन इमरान खान के नेतृत्व में किया गया था और वे अपने मकसद में असफल रहे थे ।

स्रोत- इंडयिन एक्सप्रेस

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/azadi-march-in-pakistan-signals>

